हिन्दी - पुष्प

(साउथ एशिया टाइम्स का हिन्दी परिशिष्ट)

वर्ष-६ अङ्क-३ अक्टूबर, २००९

सम्पादकीय

ज्योति से ज्योति जगाते चलो

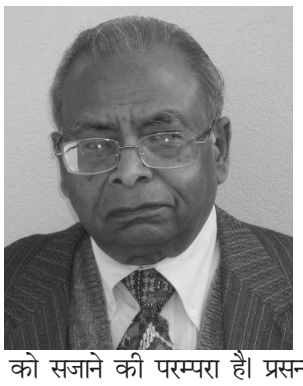

दीपावली का त्योहार प्रकाश का त्योहार कहलाता है। इस दिन से जुड़ी कई कहानियाँ हैं पर उत्तर भारत में, १४ वर्षों के वनवास के पश्चात् मर्यादा पुरुषोत्तम रामचन्द्र जी के रावण पर विजय प्राप्त कर के वापस अयोध्या लौटने की कथा सबसे प्रमुख है। दक्षिण भारत में, बाली की कथा अधिक प्रसिद्ध है जिस के अनुसार दीपावली के दिन, राजा बाली पृथ्वी पर अपनी प्रजा का हाल-चाल लेने और उन्हें दर्शन देने आता है। इस दिन गणेश-लक्ष्मी के पूजन तथा घरों, दुकानों की सफ़ाई कर के उन्हें सजाने और दीपकों के जलाने की परम्परा है। यह त्योहार, ख़ुशी का त्योहार है। एक रोचक बात यह है कि दीपावली के अतिरिक्त कुछ अन्य प्रकाश के त्योहार भी होते हैं, उदाहरण के लिये, चीनी, वियतनामी 'लालटेन का त्योहार'। इस त्योहार में लोग ख़ुशियाँ मनाते हैं और रंगीन कागज़ों की लालटेन बना कर, उस में मोमबत्ती जला कर, जुलूस निकालते हैं और आतिशबाजी का प्रदर्शन करते हैं। इसी प्रकार यहूदियों के प्रकाश का त्योहार, 'चानुक्का' में आठ दिनों तक नौ मोमबत्तियाँ जला कर प्रार्थना करने और घरों को सजाने की परम्परा है। प्रसन्नता की बात है कि अब ऑस्ट्रेलिया में भी दीपावली का त्योहार बड़े धूम-धाम से मनाया जाने लगा है और सरकारी इमारतें भी इस अवसर पर प्रकाशमान की जाने लगी हैं। "ज्योति से ज्योति जगाते चलो, प्रेम की गंगा बहाते चलो"। आप सबके लिये दीपावली का त्योहार शुभ हो और आपके तथा आपके परिवार के लिये सुख, शांति तथा समृद्धि लाये।

हिन्दी-पुष्प के इस अङ्क में काव्य-कुंज में दीपावली आदि पर कुछ रोचक कविताएँ हैं, दिवाली, गांधी जयंती तथा शास्त्री-जयंती पर पाठकों के दो रोचक पत्र हैं। इसके अतिरिक्त मेल्बर्न के हिन्दी-निकेतन द्वारा मनाये गये 'हिन्दी-दिवस' पर एक रिपोर्ट है। साथ में 'अब हँसने की बारी है' तथा सूचनाएँ भी हैं। आशा है आपको यह अङ्क पसंद आएगा। आपके विचारों, सुझावों तथा रचनाओं का हम स्वागत करेंगे।

-दिनेश श्रीवास्तव

लेखकों से निवेदन

१. कृपया अपनी रचनाएँ (कहानियाँ, कविताएँ, लेख, चुटकुले, मनोरंजक अनुभव आदि) निम्नलिखित पते पर भेजे -

डा० दिनेश श्रीवास्तव, १४१ हायट स्ट्रीट. रिचमंड, विक्टोरिया ३१२१

(Dr. Dinesh Srivastava, 141 Highett Street, Richmond, Victoria 3121)

२. हस्तलिखित रचनाएँ स्वीकार की जाएँगी परन्तु इलेक्ट्रानिक रूप से हिन्दी-संस्कृत फ़ांट मे रचनाएँ भेजे तो उनका प्रकाशन हमारे लिए अधिक सुविधाजनक होगा।

ई-मेल से रचनाएँ भेजने का पता है-

dsrivastava@optusnet.com.au

३. अपनी रचनाएँ भेजते समय अपनी रचना की एक प्रतिलिपि अपने पास अवश्य रखे।

काव्य-कुंज

आओ एक दिया जलाये

- रचना श्रीवास्तव, डल्लास, अमेरिका

आशा किरण घर-घर फैले
आंगन-आंगन खुशियाँ डोलें
ज्यतिर्मय हो मन लहराये
आओ एक दीप जलायें

निशा दिवस बन जाए
घटा हँसी की चहुँ ओर छाये
बरसे प्रेम-रस, सभी नहायें
आओ एक दीप जलायें

ज्ञान का आलोक हो
निर्भय जन,मन,प्राण हो
आस गंगा धरती पर बहायें
आओ एक दीप जलायें

गणेश-लक्ष्मी हर घर आसन धरें
कष्ट मिटायें, लक्ष दोष हरें
लक्ष्मी विष्णु-प्रिया
गणेश विघ्न-विनाशक कहलायें
आओ एक दीप जलायें

हरगोविंद जी का मुक्ति-दिवस हो
या महावीर जी को निर्वाण मिला हो
राम जी अयोध्या आ पहुँचे हों
या पांडवों ने पूरा बनवास किया हो
हो कारण कोई भी
प्रेम का तोरण हर द्वार सजायें
खुशियों की सौगात लुटायें
आओ एक दीप जलायें

दीप जलाने हों तो...

-पराशर गौड़, कनाडा

दीप जलाने हों तो,
मन के दीप जलायें
नफ़रत का तिमिर हटे
चेहरों पर मुस्कानें आयें

तम की तमस् हटे
विश्वासों का सूत्रपात हो
जन-मानस के उर में जागे
प्रेम-मिलन की लौ हो!
जगमग जग हो उजियारा
लौ दूर से दिये दिखाये
दीप जलाने हों तो...

विघ्नों की लौ जले
क्षितिज पर नया सबेरा हो
इन्द्रधनुष सा बिखरे प्यार
शान्ति-मिलन का अवसर हो
दिशा-दिशाओं से हटे तम
उजियारा उभर कर आये
दीप जलाने हों तो...

पुलकित हों दिन-रात
हर्षित शाम सबेरा हो
आशाओं की बाती में
कल के सपनों का मंजर हो
थकें न मन के भाव
भावनाओं के दीप जलें
दीप जलाने हों तो...

द्वेष रहित हो मानव
मानव-मानव का सहचर हो
कटुता मिट जाये मन से
लगन प्यार की हो
घटा, गगन और मन
तब सब मिल कर ज्योति जलायें
दीप जलाने हों तो...

दिवाली आयी

- हरिहर झा, मेल्बर्न

भई कैसा है उजियारा,
जब कि अमावस काली आयी
बोले आकाश से पटाख़े,
धरती पर दिवाली आयी

नासमझ चाशनी कढ़ाई से
क्यों लार टपकाये
बहुत सज-धज कर
मिठाई से भरी थाली आयी।

दिया जला तो भाव बदले,
रंग बदले ज़माने के
ज़िन्दगी उदास थी पर
अब गालों पर लाली आयी

बेसुध थी रात
कुछ ओढ़ने का भान किस को?
अब नाक में नथनी और
कानों में बाली आयी

कौन किसे मनाये,
गाल फुलाये बैठे थे जब
दीप से दीप जले,
घर में ख़ुशहाली आयी

निगाह फेंके हम पर,
फ़ुरसत न थी घरवाली को
"दिवाली मुबारक़ हो!"
कहती हुई साली आयी

हिन्दी भाषा का गुणगान

- नलिन कांत शारदा, मेल्बर्न

हिन्दी भाषा तू मीठी ऐसी,
ज्यों मधुर सुरों की होवे तान।
मन में उठते सब भावों में
जैसे है तू फूँके जान॥

हिन्दी भाषा तू संस्कृत इतनी,
युगों से भारत की पहचान।
संस्कृत तेरी जननी है
तो उर्दू से भी पायी शान॥

हिन्दी भाषा तू प्रचलित इतनी,
जगह-जगह हैं तेरे धाम।
दुनिया के कोने-कोने में
अब गाते हैं तेरे गान॥

हिन्दी भाषा, तू सरल सुहानी,
हर अक्षर की एक पहचान।
ज्यों युगों से फलती आयी है तू
त्यों युग-युग हो तेरा गुणगान॥

सम्पादक के नाम पत्र

१. दिवाली

सम्पादक महोदय,
जब मैं छोटा बालक था तो मेरी दादी मुझसे कहा करती थीं कि हमें भी दिवाली पर दिये जलाने चाहियें ताकि शहर में हर किसी को दिये का प्रकाश मिले। मैं हर वर्ष दिवाली का इंतज़ार करता था और धन-तेरस के दिन मिट्टी के दिये, खील और शक्कर के बताशे ख़रीदने सुबह-सुबह बाज़ार जाया करता था। हर दिवाली पर, मिट्टी के खिलौने, मेरे दूसरे खिलौने के संग्रह में इजाफ़ा करते थे। दिवाली और ईद के त्योहार, हमारे छोटे से शहर फ़रीदाबाद में जहाँ मेरा जन्म हुआ था, सबके लिये थे। कुछ लोगों के लिये दिवाली और ईद धार्मिक त्योहार हैं पर मेरे लिये ये त्योहार समाज में सच्ची एकता, मानवता और सौहार्द तथा मैत्री बढ़ाने के त्योहार हैं। अपने बचपन की याददाश्तों को स्मरण करते हुए, मैं आपको तथा आपके सभी पाठकों को दिवाली की शुभकामनाएँ देता हूँ और आशा करता हूँ कि यह दिवाली आप सबका जीवन सुख, शांति, समृद्धि तथा खुशियों से भर देगी।

- अब्बास रज़ा अलवी, सिडनी

२(क). गांधी-जयंती और सोने की कलम

गांधी जयंती के अवसर पर २ अक्टूबर को भारत में जगह-जगह ढेर सारे उत्सव मनाये गये परन्तु सबसे अधिक चर्चा इस बार जर्मनी की मो ब्लाँ कम्पनी द्वारा बनायी गई १८ कैरट सोने की कलम (फ़ाउन्टेन पेन) के एक प्रतिरूप (मॉडल) की हुई जिसकी क्लिप में एक केसरिया रक्तमणि (गार्नट) लगा है और जिसकी रेडियम प्लेटेड निब पर गांधी जी का एक रेखाचित्र है। इस कलम के साथ एक ८ मीटर लम्बा सोने का धागा भी है जो लपेटने के बाद इसे चरखे की तकली का रूप दे देता है। यह कम्पनी गांधीजी के १९३० के 'नमक आंदोलन' में गांधी जी के २४१ मील चलने की याद में केवल २४१ ही ऐसे हस्तनिर्मित कलम बनाएगी। ऐसी हर कलम की कीमत २५,००० अमेरिकी डालर होगी।
मो ब्लाँ कम्पनी के भारतीय प्रतिनिधि के अनुसार उनकी कम्पनी पहले भी महान सिकंदर (एलेक्जेन्डर द ग्रेट) और विन्सटन चर्चिल के सम्मान में कलमों के विशेष मॉडल निकाल चुकी है।
चर्चा का विषय यह बना है कि गांधी जी जैसे साधु प्रकृति महात्मा के नाम का उपयोग व्यवसायिक रूप से पैसा कमाने के लिये नहीं होना चाहिये क्योंकि यह उनके आदर्शों के विरुद्ध है।
वैसे ध्यान से देखें तो कम्पनी ने अपनी तरफ से गांधीजी का सम्मान करने का काफी प्रयास किया है। तुषार गांधी की 'महात्मा गांधी फाउन्डेशन' को ७२ लाख रुपयों का चेक दिया है और ऐसी हर कलम के बिकने पर ३०० से १००० डालर तक दान में दिया जायेगा। यदि यह सारा पैसा ग़रीबों के भले में ख़र्च किया जाय तो यह किसी भी तरह से गांधीजी के विचारों के विपरीत नहीं होगा!

आजकल की व्यावसायिक जीवनशैली में यदि कहीं, कोई फ़ायदा दिखाई पड़े तो आसानी से सिद्धान्त एक तरफ़ रख दिये जाते है। यदि गांधीजी के नाम या फ़ोटो से इस प्रकार कुछ पैसा बने तो क्या नुकसान है? पहले भी 'गूगल' से ले कर 'एपल कम्पूटर' आदि ने गांधी जी के नाम व छवि का इस्तेमाल किया है। 'लगे रहो मुन्नाभाई' की अंधाधुंध सफलता इस बात का सबसे अच्छा उदाहरण है। इस तरह मो ब्लाँ कम्पनी के 'गांधी-पेन' को ले कर हंगामा करना सिर्फ एक राजनैतिक खेल है। इससे गांधीजी का न तो कोई अपमान होता है न ही उनके सिद्धान्तों को कोई ठेस पहुँचती है।

२(ख). शास्त्री जयंती

२ अक्टूबर को भारत के दूसरे प्रधान मंत्री व गांधीजी के आजीवन अनुयायी, भारत रत्न श्री लाल बहादुर शास्त्री का भी जन्म दिन होता है। उनका नाम सभी राजनैतिक या व्यवसायिक संस्थाओं ने भुला दिया है क्योंकि इस नाम से कोई कमाई नहीं होती। लोक सभा में औपचारिक रूप से प्रधान मंत्री ने उन्हें श्रद्धांजलि दी और काम खतम। कुछ वर्षों पहले उनकी जन्म शताब्दी समारोह के लिये सरकार ने १०० करोड़ रुपये दिये थे लेकिन वह साल के अन्त तक ख़र्च भी न हो सके क्योंकि इसमें किसी को कोई दिलचस्पी नहीं थी।

'जय जवान, जय किसान' का नारा देने वाले शास्त्रीजी का सबसे बड़ा योगदान यह रहा है कि चीन से बुरी तरह हारने के बाद जब भारतीयों का मनोबल धरातल पर पहुँच गया था तब उन्होंने एक बार फिर देश को सम्मान दिलाया। १९ महीनों के अल्प राज्यकाल में, १९६५ के युद्ध में पाकिस्तान को मात दे कर, अपनी शर्तों पर ताशकंद संधि करवाई। एक बार फिर भारत अर्न्तराष्ट्रीय मंच पर बोलने की स्थिति में हो गया। परन्तु उनके देहान्त के बाद भारत के नये प्रधान मंत्री के चुनाव के राजनैतिक बवंडर में उनका नाम कहीं उड़ कर खो गया।
उनको श्रद्धा पूर्वक प्रणाम कर, एक बार फिर याद करना हमारा कर्तव्य है।

- सुधा विजय अग्रवाल, मेल्बर्न

रिपोर्ट

मेल्बर्न के हिन्दी-निकेतन ने मनाया हिन्दी-दिवस

मेल्बर्न के हिन्दी निकेतन ने रविवार, २० सितम्बर को 'हिन्दी-दिवस' मनाया। इस अवसर पर कुमारी अमिन्द्या गौड़ ने एक बॉलीवुड नृत्य प्रस्तुत किया और बालक भावेश ने प्रश्नोत्तर के रूप में मनोरंजक चुटकुले सुनाये। मेल्बर्न कवियों ने अपनी रचनाएँ सुनायीं। इन में, हरिहर झा की हास्य कविता 'बिखरा पड़ा है' तथा सुभाष शर्मा व नलिन कांत शारदा की हिन्दी-भाषा का गुणगान तथा महत्व पर भावनात्मक कविताएँ सम्मिलित थीं।
राजेन्द्र चोपड़ा ने प्रवासी माता-पिता के साथ किये जाने वाले दुर्व्यवहार के बारे में अपनी एक रोचक कविता सुनायी। इस अवसर पर भारतीय विद्या भवन, ऑस्ट्रेलिया द्वारा निम्नलिखित व्यक्तियों को हिन्दी के प्रचार-प्रसार में योगदान के लिये सम्मानित किया गया-
डा० दिनेश श्रीवास्तव तथा जया शर्मा (२००८)
हरिहर झा, सुभाष शर्मा, नलिन कांत शारदा, राधेश्याम गुप्ता, रतन चंद मूलचंदानी (२००९)।

इस अवसर पर, उन विद्यार्थियों को भी पुरस्कृत किया गया, जिन्होंने हिन्दी विषय ले कर २००८ में विक्टोरियन सर्टिफ़िकेट ऑफ़ एजुकेशन (वी०सी०ई०) की परीक्षा उत्तीर्ण की थी। इसके अतिरिक्त, 'इंडिया ऐट मेलबर्न' नामक पत्रिका के व्यवस्थापक अनिल शर्मा को भी सम्मानित किया।
कार्यक्रम के मुख्य अतिथि मेल्बर्न में भारतीय वाणिज्य दूतावास के सांस्कृतिक सचिव, अनिल गुप्ता थे, जिन्होंने बताया कि मेल्बर्न विश्वविद्यालय में खुलने वाले भारतीय संस्थान को ८० लाख डालर का अनुदान मिलेगा और इस में लाट्रोब विश्वविद्यालय में हिन्दी-शिक्षा के लिये भी प्रावधान होगा।
कार्यक्रम का संचालन डा० शरद गुप्ता ने किया। अन्य वक्तागण, जिन्होंने हिन्दी के महत्व तथा हिन्दी-शिक्षा के बारे में भाषण दिये, उनमें 'हिन्दी-पुष्प' के सम्पादक, डा० दिनेश श्रीवास्तव, विक्टोरियन स्कूल ऑफ़ लैंग्वेजेज़ में हिन्दी-संयोजिका श्रीमती मंजीत ठेठी, हिन्दी निकेतन के अध्यक्ष, शमशेर सिंह तथा उपाध्यक्ष, डा० नौनिहाल सिंह जी सम्मिलित थे।

महत्वपूर्ण तिथियाँ

गांधी-जयंती, शास्त्री-जयंती (२ अक्टूबर), दीपावली (१७ अक्टूबर), हैलोवीन (३१ अक्टूबर), गुरु नानक जयंती तथा बुद्ध धर्म का संघ-दिवस (२ नवम्बर), बक़रीद (२७ नवम्बर)।

सूचनाएँ

१. **दिवाली-मेला -** इस वर्ष, मेल्बर्न में चार स्थानों पर दिवाली-मेला लगने का आयोजन है।
तिथि, स्थान, तथा सम्पर्क -
शनिवार, ३ अक्टूबर- टेड् ह्विटेन ओवल, फ़ुट्स्क्रे। सम्पर्क (०४२१ ८७१ १८१)
शनिवार, १० अक्टूबर - फ़ेडरेशन-स्कवायर, मेल्बर्न। सम्पर्क - अरुण शर्मा (०४१२ १८३ १)
रविवार, ११ अक्टूबर - सैंडडाउन रेस-कोर्स। सम्पर्क - योगेन लक्ष्मण (०४०३ ३३७ १४२)
शनिवार, १७ अक्टूबर - श्री शिव-विष्णु मंदिर, कैरम डाउन्स। सम्पर्क - (०३-९७८२-०८७८)

२. **साहित्य-संध्या -** अपने लोग, अपनी बातें (शनिवार, ७ नवम्बर)
स्थान - फ़िलिस होर रूम, क्यू सिटी लाइब्रेरी, कोथम रोड और सिविक ड्राइव के नुक्कड़ पर क्यू-३१०१ (मेलवे संदर्भ ४५डी ६)
समय - रात के ७.३० बजे से १०.३० बजे तक। प्रवेश नि:शुल्क है।
अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क कीजिये - हरिहर झा (९५५५-४९२४), नलिन शारदा (०४०२)१०८५१२,
सुभाष शर्मा(०४३३)१७८३७७।
पिछली साहित्य-संध्या की फोटुओं तथा 'हिन्दी-पुष्प' के पुराने अंकों के लिये, निम्नलिखित वेबसाइट देखिये
http://sahityasangam. weebly.com /index.html

३. **महफ़िल-नाइट** (शुक्रवार, २१ नवम्बर)
स्थान - कोबर्ग में लुइसा स्ट्रीट और विक्टोरिया स्ट्रीट के नुक्कड़ पर स्थित कोबर्ग पुस्तकालय हॉल।
समय- रात्रि के ८ बजे से १० बजे तक। सभी संगीत प्रेमी आमंत्रित हैं। प्रवेश नि:शुल्क है।
अधिक जानकारी के लिये, डाक्टर शरतचन्द्रन को ९३६६-५४४ पर फ़ोन कीजिए।

४. **क्रिकेट खिलाड़ियों के लिये सुनहरा अवसर (नवम्बर, २००९ से जनवरी २०१० तक)**
जाटा (JATA) वर्ग द्वारा आयोजित २०-२० क्रिकेट प्रतिद्वंदिता में अपनी प्रतिभा दिखाइये और २० हज़ार डालर तक के पुरस्कार जीतने का अवसर प्राप्त कीजिये। इस प्रतियोगिता को 'क्रिकेट विक्टोरिया' का पूरा समर्थन प्राप्त है।
अधिक जानकारी के लिये नव (फ़ोन न०-०३ ९६२९ ३९०५ अथवा १३०० ०० ५२८२ से सम्पर्क कीजिये या फिर निम्नलिखित पते पर ई-मेल भेजिये -
cricket@jata.com.au
वेबसाइट - www.jatasports.com.au

५. **संगीत-संध्या** (शनिवार, ५ दिसम्बर)
स्थान - ब्रेन्डन पार्क प्राइमरी स्कूल, कूटामुड्रा ड्राइव, ह्वीलर्स हिल (मेल्वे संदर्भ - ७१ ई ११)
कार-पार्क का प्रवेश नाइनेवा क्रेसेन्ट से है।
समय - रात के ८ बजे से १० बजे तक। प्रवेश नि:शुल्क है।

अधिक जानकारी के लिये, राधेश्याम गुप्त को (०३) ९८४६२५ ९५ अथवा (०४०२) ०७४ २०८ पर फ़ोन कीजिये।

अब हँसने की बारी है

१. मोटापा और पति-पत्नी

पत्नी (पति से) - आप बहुत मोटे गये हैं।
पति (पत्नी से) - तुम भी तो कितनी मोटी हो गयी हो।
पत्नी (पति से) - मैं तो माँ बनने वाली हूँ।
पति (पत्नी से) - तो मैं भी तो बाप बनने वाला हूँ।

२. दीर्घ-आयु

एक बुज़ुर्ग व्यक्ति अपनी दीर्घ-आयु का राज़ बता रहे थे - "मेरी उम्र ८५ वर्ष है परन्तु मैंने कभी सिगरेट नहीं पी, मदिरापान नहीं किया और न कभी जुआ खेला और न ही कभी किसी स्त्री की ओर आँख उठा कर देखा"।
सुनने वाला बोला -"मुझे समझ नहीं आ रहा है कि इतने वर्षों से आप ज़िंदा किस लिये हैं?

३. शादी और बाराती

रमेश (सुरेश से) - शादी में दूल्हे के साथ बाराती क्यों जाते हैं?
सुरेश (रमेश से) - क्योंकि बुज़ुर्ग लोग कहते हैं कि किसी की खुशी में जाओ चाहे न जाओ पर मुसीबत में ज़रूर जाना चाहिये।